दिनांक 21/4/20 (1)

कक्षा-12
विषय-हिन्दी आरोह भाग दो (काव्य खण्ड)
कवि एवम् कविता का परिचय

कवि - 'हरिवंश राय बच्चन'
कविता - 'आत्मपरिचय'

कवि परिचय - जन्म सन् - 1907, इलाहाबाद
निधन सन् 2003. मुंबई में.

रचनाएँ :- हरिवंश राय बच्चन की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित है -
काव्य संग्रह - मधुशाला 1935, मधुबाला 1938, मधु कलश 1938, मिलन यामिनी, निशा निमंत्रण, एकांत संगीत नए पुराने झरोखे, आरती और अंगारे, टूटी-फूटी कड़ियाँ

आत्मकथा :- क्या भूलूँ क्या याद करूँ, नीड़ का निर्माण फिर, बसेरे से दूर, दशद्वार सोपान तक,

'आत्मपरिचय कविता का सार'

"आत्मपरिचय" कविता में कवि अपना भावात्मक परिचय दे रहा है, कवि कहते हैं, कि मुझे स्वयं से अधिक इस संसार की चिन्ता रहती है, कवि संसार का दायित्व अपने ऊपर लेता हुआ उसे प्यार की सौगात देना चाहता है,

कवि अपना परिचय देते हुए लगातार दुनिया से अपने द्विधात्मक और द्वंद्वात्मक सम्बन्धों का मर्म ही उद्घाटित करता चलता है, और पूरी कविता का सारांश एक पंक्ति में यह बताता है कि दुनिया से मेरा सम्बन्ध प्रीतिकलह का है

'आत्मपरिचय' कविता

(1). मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ,
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ,

SHOT ON REDMI Y3
AI DUAL CAMERA

Scanned with CamScanner

मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ.
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,
जग पूछ रहा जिनको, जो जग की गाते
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ,
मैं जग - जीवन — — — — — — गान किया करता हूँ

शब्दार्थ - जग - जीवन = सांसारिक गतिविधि
भार = बोझ, उत्तरदायित्व,
झंकृत = तारों को, बजा कर स्वर निकलना, ध्वनि
स्नेह-सुरा = प्रेम रूपी मदिरा।
स्नेह = प्रेम
सुरा = शराब
पान = पीना
जग की गाते = संसार की परम्पराओं का अनुसरण

• व्याख्या ÷ कवि कहते हैं कि मैं संसार में जीवन का भार उठाकर घूमता रहता हूँ, इसे बाबजूद मेरा जीवन प्यार से भरा-पूरा है, जीवन की समस्याओं के बावजूद कवि के जीवन में प्यार है, उनका जीवन की तरह है, जिसे किसी ने छूकर झंकृत (ध्वनि) कर दिया है, फलस्वरूप उसका जीवन संगीत से भर उठा है, उसका जीवन इन्हीं तार रूपी सांसों के कारण चल रहा है। उसने स्नेह (प्रेम) रूपी शराब की रखी है,
अर्थात प्रेम किया है, तथा बाँटा है, उसने कभी संसार की परवाह नहीं की, संसार के लोगों की प्रवृत्ति है, कि वो उनको पूछते हैं, जो संसार के अनुसार चलते हैं, तथा उनका गुणगान करते हैं। कवि अपने मन की इच्छानुसार चलता है। अर्थात वह वही करता है, जो उसका मन कहता है,

SHOT ON REDMI Y3
AI DUAL CAMERA

Scanned with CamScanner

सौन्दर्यबोध - !

1- कवि ने निजी प्रेम को स्वीकार किया है,
2. 'जग - जीवन', 'स्नेह - सुरा' में अनुप्रास अलंकार है.
Note एक वर्ण की आवृति बार-बार " ज - ज
3- भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण, और खड़ी बोली है,

- काव्यांश पर आधारित अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्नोत्तर

क पद्यांश के कवि और कविता का नाम लिखिए,
उत्तर. कवि का नाम - हरिवंश राय बच्चन
कविता का नाम - आत्म परिचय
ख. कवि ने जग- जीवन का भार किसे कहा है
उत्तर- कवि ने अपने सांसारिक उत्तरदायित्वों को जग-जीवन का भार" कहा है,
ग- 'स्नेह सुरा' से कवि का क्या आशय है,
उत्तर स्नेह - सुरा का पान करने से कवि का आशय यह है, कि उसे प्रेम की मादकता का उपभोग करना अच्छा लगता है,
घ, कवि जग का ध्यान क्यों नहीं करता
उत्तर - कवि का मन केवल अपने प्रिय के प्रेम में रमा है. इसलिये वह मन ही मन अब भी उसी प्रेम को पाना चाहता है,

2-
मैं निज उर के उद्गार लिए फिरता हूँ,
मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ.
है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ,

मैं जला हृदय में अग्नि दहा करता हूँ।
सुख-दुःख दोनों में मग्न रहा करता हूँ,
जग भव सागर तरने को नाव बनाए
मैं भव मौजों पर मस्त बहा करता हूँ,

SHOT ON REDMI Y3
AI DUAL CAMERA

Scanned with CamScanner

• 2 मैं निज - - - - - - दहा करता हूँ।

शब्दार्थ :- उर = हृदय
उद्गार = भाव अथवा विचारों की अभिव्यक्ति
भाता = अच्छा लगता है।
स्वप्नों का संसार = कल्पना लोक
दहा करता हूँ = जलता रहता हूँ
भव सागर = सांसारिक जीवन रूपी समुद्र
तरने = उद्धार करने।

• **व्याख्या** :- कवि कहता है कि मैं अपनी कविता के द्वारा अपने हृदय के भावों को सारे संसार के सामने अभिव्यक्त करता फिरता हूँ कवि को खुशी के जो उपहार मिले हैं, उन्हें वह साथ लिए फिरता है, उसे यह संसार अधूरा लगता है, इस कारण उसे यह पसन्द नहीं है, वह अपनी कल्पना का संसार लिए फिरता है, उसे प्रेम से भरा संसार अच्छा लगता है। कवि कहते हैं कि मैं अपने हृदय में आग जलाकर उसमें जलता हूँ अर्थात मैं प्रेम की जलन को स्वयं ही सहन करता हूँ इसलिए मैं इस संसार रूपी सागर को पार करने के लिए स्वयं को प्रेम की नौका बनाए हुए आगे बढ़ता रहता हूँ। मैं पूर्ण मस्ती और आनन्द का अनुभव करते हुए इस जीवन को इस प्रकार जीता हुआ आगे बढ़ रहा हूँ जिस प्रकार कोई नौका सागर की लहरों पर नीचे- ऊपर झूलती हुई निर्द्वन्द भाव से किनारे की ओर बढ़ती है।

सौन्दर्यबोध :- 1- कविता संसार के लिए कवि का बहुमूल्य उपहार है।

2- कवि ने अपने हृदय की व्यापकता का मनोरम चित्रण किया है,
3- कवि अपने सुख-दुःख में तो समभाव रखता है अर्थात एक-समान रहता है
4- साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है

• काव्यांश पर आधारित अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्नोत्तर

प्रश्न-1- 'निज उर के उद्‌गार' व 'उपहार' से कवि का क्या आशय हो सकता है,

उत्तर- निज उर के उद्‌गार से कवि का आशय अपने मन और कल्पना में देखा नया संसार के कल्याण की भावना से है Note. इसी प्रकार उपहार से आशय यह है कि कवि की कविता में यदि विश्वकल्याण की भावना निहित है तो संसार के लिए किसी (सर्वोत्तम उपहार) से कम नहीं है,

प्रश्न-2 कवि संसार को अपूर्ण क्यों कहता है

उत्तर- कवि संसार को अभावग्रस्त पाता है, विशेषकर उसके लिए स्नेह से तो यह संसार खाली ही है. इस लिए वह इस संसार को अपूर्ण कहता है

प्रश्न-3- कवि के हृदय में कौन-सी अग्नि जल रही है, वह क्यों व्यथित है,

उत्तर- कवि के हृदय में एक विशेष आग (प्रेमाग्नि) जल रही है, वह प्रेम की वियोगावस्था में होने के कारण व्यथित है)

Scanned with CamScanner

'व्याकरण' पर्यायवाची शब्द

- पर्यायवाची शब्द परिभाषा ÷ पर्याय का अर्थ - समान तथा 'वाची' का अर्थ है - 'बोले जाने वाले' अर्थात जिन शब्दों का अर्थ एक जैसा होता है, उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते हैं,

महत्वपूर्ण पर्यायवाची शब्द ÷

1. अतिथि -	मेहमान, अभ्यागत, आगन्तुक.
2. अग्नि -	आग, ज्वाला, दहन, अनल, पावक
3. अनुपम	अपूर्व, अतुल, अनोखा, अनूठा
4. अश्व	हय, तुरंग, घोड़ा, घोटक.
5. अध्ययन	पठन - पाठन, पढ़ना, पढ़ाई,
6 इन्द्र -	सुरेश, देवराज, महेन्द्र सुरपति,
7 कमल	पद्म, सरोज, राजीव, जलज
8 चन्द्रमा	चाँद, सुधाकर, निशाकर, ~~पूर्णेन्दु~~.
9 रात	निशा, रजनी, रैन, तमी,
10 बादल	अभ्र, मेघ, जलधर वारिद, घन
11 वायु	हवा, समीर, पवन, मारुत.
12 पेड़	पादप ~~तरु~~ तरु, तरुवर, वृक्ष,
13 पृथ्वी	भू, भूमि, धरा, वसुधा धरती, मही
14 भौंरा	अलि, भ्रमर, मधुप, मधुकर
15 जल	नीर, तोय, सलिल, अंबु,
16 नदी	सरिता, तटिनी, आपगा, तरंगिनी,
17 तालाब -	सर, सरोवर, तडाग, पुष्कर,

SHOT ON REDMI Y3
AI DUAL CAMERA

Scanned with CamScanner